

**अभूतपूर्व** वि. (तत्.) 1. जो पहले न हुआ हो, अपूर्व 2. अनोखा।

**अभूतार्थ** पुं. (तत्.) पहले नहीं हुई। अनहोनी (बात)। जैसे- खरगोश का सींग।

**अभूमि** स्त्री. (तत्.) 1. भूमि से इतर अन्य वस्तु 2. अनुप्रयुक्त स्थल वि. भूमिहीन।

**अभूषित** वि. (तत्.) 1. आभूषण-रहित 2. अनलंकृत, बिना साज-सज्जा का।

**अभेद** पुं. (तत्.) 1. भेद का अभाव, भेदभाव न होने की स्थिति या भाव, एकता 2. एकरूपता वि. (तत्.) 1. भेदरहित 2. अनुरूप, समान।

**अभेदनीय** वि. (तत्.) दे. अभेद्य

**अभेदरूपक** पुं. (तत्.) साहि. रूपक अलंकार का एक भेद जिसमें उपमान और उपमेय दोनों में अभेद माना गया है।

**अभेदवाद** पुं. (तत्.) धर्म. सभी धर्मों को एक सा मानने का सिद्धांत दर्श. यह मान्यता कि हर सत्ता की अपनी-अपनी विशिष्टता के बावजूद सभी सत्ताएं मूलतः एक (सी) ही हैं।

**अभेदवादी** वि. (तत्.) भेद न मानने वाला, अद्वैतवादी, माया और ईश्वर को एक मानने वाला।

**अभेदाभाव** पुं. (तत्.) भिन्नता का अभाव, भिन्नता का न होना, अभिन्नता या एकता की स्थिति।

**अभेदाभेद** पुं. (तत्.) भेद या अभेद (भेदहीनता) का न होना, एकाकारिता।

**अभेद्य** वि. (तत्.) 1. जिसका भेदन या छेदन संभव न हो 2. जिसको खंडित न किया जा सके 3. जिसमें प्रवेश न किया जा सके विलो. भेद्य।

**अभेरा** पुं. (देश.) 1. टकराहट, भिड़ना, मुठभेड़ 2. धक्का।

**अभोक्ता** पुं. (तत्.) 1. भोग न करनेवाला 2. विरक्त विलो. भोक्ता।

**अभोग** पुं. (तत्.) 1. भोग न किए जाने की स्थिति 2. दे. अभोग्य।

**अभोगी** वि. (तत्.) 1. भोग न करने वाला 2. अभोक्ता, विरक्त।

**अभोग्य** वि. (तत्.) जो भोग के योग्य न हो; जिसे भोगना अनुचित हो प्र. संन्यासी के लिए मांस-मदिरा सदैव अभोग्य रहे हैं विलो. भोग्य।

**अभोज** वि. (तत्.) जो खाने योग्य न हो, अभोज्य; अभक्ष्य।

**अभोजन** पुं. (तत्.) 1. भोजन न करने की स्थिति; उपवास का भाव 2. भोजन का अभाव।

**अभोज्य** वि. (तत्.) न खाने योग्य, अभक्ष्य।

**अभौतिक** वि. (तत्.) जो पंचभूत से न बना हो, जो भौतिक न हो, अपार्थिव, अगोचर विलो. भौतिक।

**अभौम** वि. (तत्.) जो पृथ्वी से उत्पन्न न हुआ हो, अपार्थिव।

**अभ्यंग** पुं. (तत्.) शरीर में तेल की मालिश, तेल-लेपन, लेपन; उबटन।

**अभ्यंजन** पुं. (तत्.) 1. तेलादि की मालिश 2. आँखों में अंजन या सुरमा लगाना 3. अंगरागादि।

**अभ्यंतर** पुं. (तत्.) 1. मध्य, बीच 2. हृदय क्रि.वि. (तत्.) भीतर, अंदर।

**अभ्यंतर खेल** पुं. (तत्.) बंद प्रांगण में खेले जाने वाले खेल जैसे- बैडमिंटन।

**अभ्यंश** पुं. (तत्.) भाग, हिस्सा, खंड।

**अभ्यक्त** वि. (तत्.) 1. जिसकी तेल-इत्र से मालिश हुई हो। 2. लिपा-पुता 3. सजा-सँवरा।

**अभ्यर्पण मूल्य** पुं. (तत्.) बाणि. समय पूर्व या परिपक्वता से पहले बीमा पॉलिसी बंद करने के निवेदन पर देय राशि। surrender value

**अभ्यर्पण संधि** स्त्री. (तत्.) किसी प्रभुता संपन्न राज्य द्वारा किसी अन्य प्रभुता-संपन्न राज्य को अपने क्षेत्र का कुछ भाग उसे देने और उस दूसरे राज्य द्वारा ग्रहण किए जाने का करार।

**अभ्यर्चन** पुं. (तत्.) 1. अर्चना, उपासना, आराधना 2. सम्मान।

**अभ्यर्चना** स्त्री. (तत्.) 1. पूजन, अर्चन, आराधना 2. सम्मान, आदर।